SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

डॉ. अनुसुइया अग्रवाल का शोधात्मक प्रदेय

पूरन कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई–नगर, जिला – दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी, (Ph.D.), शोध निर्देशक, हिंदी विभाग,
अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय, पांडातराई, जिला–कवर्धा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

पूरन कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई–नगर,
जिला – दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी, (Ph.D.), शोध निर्देशक,
हिंदी विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय
महाविद्यालय, पांडातराई, जिला–कवर्धा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/08/2022
Revised on : -----
Accepted on : 29/08/2022
Plagiarism : 00% on 23/08/2022

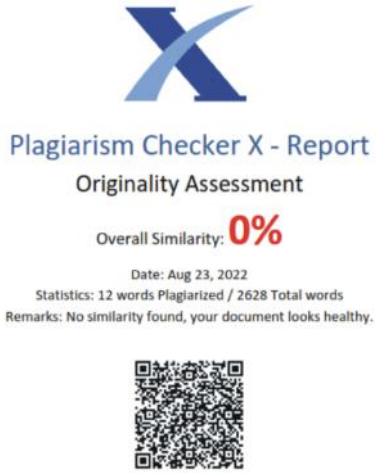

शोध सार

अनुसुइया अग्रवाल के ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहने के कारण उनके साहित्य में छत्तीसगढ़ अंचल के ग्रामीण लोगों का रहन–सहन, उनकी लोक–परंपराएँ, उनके रीति–रिवाज एवं लोकगीत आदि आसानी से दृष्टिगोचर हो जाते हैं। लोकगीत जब तक मौखिक है तभी तक लोकगीत हैं, उसको जैसा चाहे अपने अनुसार तोड़–मरोड़कर, नये शब्द जोड़कर लोक गीत को बढ़ा सकते हैं किंतु जब ये लोकगीत साहित्य का रूप धारण कर लेता है, तो पूर्णतः लोकगीतों का एक शास्त्र निर्मित हो जाता है जिसे लोक साहित्य शास्त्र कहते हैं। लोकगीत, लोक साहित्य शास्त्र को अग्रवाल ने अपनी शोधात्मक ग्रंथों का आधार बनाया है।

मुख्य शब्द

लोकगीत, अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति, लोक साहित्य शास्त्र, ग्रामीण अंचल.

भूमिका

किसी भी राज्य एवं देश की सांस्कृतिक चेतना को जानने के लिए वहाँ के लोक साहित्य को जानना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी हो जाता है क्योंकि साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। साहित्य संवेदना की अभिव्यक्ति है, साहित्य किसी भी भाषा में क्यों न लिखा हो, साहित्य से विचार जुड़े हुए रहतें हैं। साहित्यकार अपने विचारों को संवेदना के रूप में व्यक्त कर पाठकों से साहित्य के माध्यम से एक लगाव से जुड़ जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने पर छत्तीसगढ़ी भाषा में साहित्य लेखन में बहार आ गयी है और अब लोक साहित्य की रचनाएँ होने लगी हैं। लोक साहित्य का विभिन्न विधाएं हमारी लोक संस्कृति

को प्रभावित करती हैं और उससे स्वयं भी प्रभावित होती है। लोक साहित्य मे शुरुआत से ही अतीत, वर्तमान और भविष्य में लोक–सृजन की विविध विधाओं में उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है।

लोक साहित्य के अध्ययन का अर्थ प्रयोग लोक गीतों, लोक कथाओं का संकलन मात्र मान लिया जाता है। लोक साहित्य तो अनादिकाल से अनंतकाल तक मनुष्य की जीवन यात्रा का वह प्रवहमान–साहित्य है जिसमें वह कब और कहाँ उठा? गिरा? चला? रुका और आगे बढ़ा? इन सब का शोध और अध्ययन अपेक्षित है। ललित शुक्ल लिखते हैं "दृश्य, श्रुत और लिखित तथ्य और तथ्यात्मक विवृत्तियाँ हमें अतीत का दर्पण दिखाती हैं और वर्तमान का रूप – विन्यास प्रस्तुत करती हैं। आज जीवन को लगावों की आवश्यकता है अलगाव की नहीं।... भारत का पूरा लोक साहित्य लिखित कम श्रुत अधिक रहा है। यद्यपि वाचिक परम्परा से प्राप्त लोक साहित्य सम्पदा हमें काफी कुछ देती है किंतु आज श्रुत परम्परा की वकालत चाहे जितनी की जाए, युग का यथार्थ कहता है कि यह समय [1]

उपर्युक्त अपेक्षाओं और युग की इसी मांग के कारण आज लोक साहित्य के संग्रहण और संकलन की ही नहीं क्रमबद्ध अध्ययन की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य को जो पहले जनसम्मती प्राप्त थी, उसको हमारे छत्तीसगढ़ माटी की संतान डॉ. अनुसुइया अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य को सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध करने की प्रथम बार कोशिश की और सफल लेखिका के रूप में प्रख्यात हो गई।

1. डॉ. अनुसुइया अग्रवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
2. छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियां और जनजीवन।
3. हिंदी लोक साहित्यशास्त्र : सिद्धांत और विकास।
4. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति।

उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर डॉ. अनुसुइया अग्रवाल के शोधात्मक प्रदेय को विश्लेषित करने का प्रयास किया जा रहा है।

डॉ. अनुसुइया अग्रवाल का जीवन परिचय डॉ. अनुसुइया अग्रवाल का जन्म 5 जून, 1965 ईस्वी को जिला बलौदा–बाजार (छत्तीसगढ़) में उनके ननिहाल में हुआ। पिता स्व. रामगोपाल अग्रवाल, माता स्व. द्रौपदी बाई अग्रवाल थी। डॉ. अनुसुइया अग्रवाल जी के पति श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल, जो कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया सराईपाली में कार्यरत हैं, उनकी माता जी अत्यंत सरल, सौम्य और ममतामयी थी। नौकरी पेशा में नहीं थी फिर भी दिन भर अपने भरे पूरे परिवार को संभालने और सँवारने में व्यस्त रहती थी। इसके साथ ही माता द्रोपदी जी धार्मिक स्वभाव की थीं। अपने माता जी से जुड़ी रहने के कारण डॉ. अनुसुइया अग्रवाल पर भी उनका प्रभाव पड़ा और उन्होंने 'छत्तीसगढ़ के व्रत त्यौहार और कथा कहिनी' की लिपिबद्ध रचना की है। जिस प्रकार निराला जी ने अपनी पुत्री की मृत्यु पर सरोज 'स्मृति' लिखा है, उसी प्रकार डॉ. अनुसुइया अग्रवाल जी ने अपनी माता जी की मृत्यु पर 'माँ तू मानस की चौपाई'– पुस्तक लिखकर अपनी माता जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित किया है। डॉ. अनुसुइया अग्रवाल ने स्थानीय महाविद्यालय में कला में स्नातक की शिक्षा पूर्ण किया। अपने बड़े भैया के प्रयासों से स्नातकोत्तर के अध्ययन के लिए रायपुर डिग्री गर्ल्स कॉलेज में प्रवेश लिया तथा एम. ए. अंतिम हिंदी की परीक्षा दी और विश्वविद्यालय की प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान बनाते हुए परास्नातक की उपाधि प्राप्त किया। चूंकि मेरिट होल्डर छात्र थी, अतः शादी के 1 साल के अंदर ही 21 साल की अवस्था में उनकी सरकारी नौकरी लग गई और कु. अनुसुइया अग्रवाल से श्रीमती अनुसुइया अग्रवाल (सहायक प्राध्यापक– हिंदी) शासकीय महाविद्यालय, महासमुंद में बन गई। 'छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियां और जनजीवन' शीर्षक पर शोध कार्य पूर्ण कर के पी–एच. डी. की उपाधि ग्रहण की और सत्र 2008 में रांची विश्वविद्यालय, रांची से 'हिंदी लोक साहित्य शास्त्र : सिद्धांत और विकास' शीर्षक पर शोध कार्य पूर्ण करके विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधि डी. लिट (डॉक्टर ऑफ़ लेटर) प्राप्त की महासमुंद जिले की प्रथम डी. लिट और छत्तीसगढ़ राज्य की तीसरी विदुशी महिला डी. लिट होने का गौरव और सम्मान भी मिला। डॉ. अनुसुइया अग्रवाल ने शोधात्मक प्रदेय के आलावा कविता, कहानी, लघुकथा, पत्र–पत्रिकाओं में लेखन आदि कार्य भी किया है।

डॉ. अनुसुइया अग्रवाल का कृतित्व
छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियां और जनजीवन

लोकोक्तियां लोगों के अनुभव और सत्य पर आधारित होती हैं, जो लोगों के व्यवहार और सत्य को बतलाता है। लोकोक्ति में सामाजिक जीवन का सत्य मौजूद है। लोकोक्ति में गागर में सागर जैसा भाव रहता है। लोकोक्तियां अपने आप में संपूर्ण कथन होती हैं। लोकोक्तियों में जीवन के अनुभव को व्यक्त किया जाता है। लोकोक्तियां पहेलियों जैसी नहीं होती है, जिसे बुझा ना जा सके, ज्ञात न किया जा सके। लोकोक्तियां बहुत सरल होती है क्योंकि यह जन जीवन से जुड़ी हुई होती है। लोकोक्तियां जन जीवन में ही उगती है और उनका विस्तार पूरे जनमानस में होता है। साहित्य में भी लोकोक्तियों का प्रयोग निरंतर होता रहा है। लोकोक्तियों के प्रयोग करने वाले रचनाकारों ने भी महसूस किया है कि लोकोक्ति के प्रयोग ने उनकी रचनात्मक धर्मिता में नये प्राण डाल दिया है। लोकोक्तियों का अध्ययन समाज, भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र, मानवविज्ञान में लगातार हुआ है। लोकोक्तियों के प्रयोग साहित्य और रचनात्मक कार्यों में बाद में हुआ, उससे पहले हर भाषा में जीवन की सरल एवं सहज, अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में लोकोक्तियां पायी जाती रही है। हमारे छत्तीसगढ़ में भी भरपुर लोकोक्तियां हैं, जो सरल और सार्थक शक्ति संपन्न लोकोक्तियां लोक जीवन का दर्पण होती है। भाषा और बोली में 'जीवन शक्ति' का संचार कर विस्तृत सांस्कृतिक सामाजिक विवेचन करके लेखिका ने छत्तीसगढ़ के साहित्य के खजाने को समृद्ध जीवन कहा है।

लोकोक्ति की पहचान मानव अनुभव का निचोड़ के रूप में हैं। जीवन की विस्तृत प्रांगण में भिन्न–भिन्न अनुभव सर्वसाधारण के मानस को प्रभावित करते हैं। कम से कम शब्दों में जीवन के इस अनुभव को उड़ेलकर रख देना, जनजीवन को आलोकित करना, उसके मार्मिक तथ्य प्रकट करना तथा संचित ज्ञान को सूत्र रूप में प्रस्तुत करना ही लोकोक्ति का कार्य है। लोकोक्ति में बोझिलता या कृत्रिमता नहीं है, यह तो मात्र अभिव्यक्ति की सरलता, सहजता, स्वाभाविकता और मार्मिकता है इसलिए इन्हें 'लोक साहित्य के प्राण नाम' से भी जाना जाता है। जिस भाषा में जितनी लोकोक्तियां होगी उस भाषा को प्रयुक्त करने वाले उतनी ही सूक्ष्म निरीक्षक होंगे। इस दृष्टि से यदि देखा जाए तो छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियों की संख्या भी असीमित है और इस संख्या वृद्धि में कहीं कभी कोई रुकावट नहीं आयी है। आज भी नई–नई लोकोक्तियाँ बनती जा रही है, और लोग इसका प्रयोग अपने विशाल ग्रंथों, दैनिक जीवन, व्यापार–व्यवसाय तथा खेत खलिहान में करते आ रहें हैं।

परिभाषा

कृष्णचंद शर्मा के अनुसारः "लोकोक्ति वह संक्षिप्त चमत्कार पूर्ण वाक्य है, जिसमें किसी अनुभूति एवं तथ्य की चिंतापूर्ण अभिव्यक्ति होती है।"[2]

उदयनारायण तिवारी के अनुसारः "लोकोक्तियां अनुभूत ज्ञान की निधि है"।[3]

लोकोक्ति के उदाहरणः "खातु, पानी, आब, दानी।"[4]

(खेत का भोजन वास्तव में खाद पानी है) इसके अतिरिक्त किसी जाति विशेष की विचारधारा, उनके गुण, उनके आचरण आदि की जानकारी भी लोकोक्तियों से प्राप्त होती है। जीवन की प्रखर आलोचना, किंतु खूबसूरती से अत्यंत संक्षिप्त शब्दों के साथ लोकोक्ति में कह दी जाती है।

हिंदी लोक साहित्यशास्त्र सिद्धांत और विकास

लोक साहित्य एक ऐसा विषय है जिस पर आज भी गिने–चुने रूप में ही कार्य हुआ है। यह बात हिंदी के संबंध में विशेष रूप से शाश्वत सत्य है। अन्य भारतीय भाषाओं में भी इस क्षेत्र से संबंधित कार्यों का प्रमाण बहुत अधिक अच्छा नहीं है। हिंदी में लोकगीतों और लोककथाओं के संकलन कार्य तो बहुत हुए हैं, किंतु उनको आधार बनाकर सिद्धांत निरूपण के प्रयत्न आज भी संतोषजनक नहीं है। इस दृष्टि से डॉ. अनुसुइया अग्रवाल का यह कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। इन्होंने लोक साहित्य के समग्र अध्ययन को लोक साहित्यशास्त्र कहा है। विषय विशेष की सामग्री को जब व्यवस्था दी जाने लगती है तो स्वभावतः उसका एक शास्त्र निर्मित हो जाता है जिसे

साहित्यशास्त्र कहते हैं। यह शास्त्र मौलिक नहीं होता बल्कि नई सामग्री उपलब्ध होने पर अपने विचार और व्यवहार क्षेत्र का संयोजन भी करता रहता है। उन्होंने लोक साहित्य के अध्ययन की दिशाओं के निरूपण के क्रम में भारतीय और पश्चात् चिंतन का उपयोग कर उसको एक समेकित वैश्विक भूमिका प्रदान की है। हिंदी लोक साहित्य शास्त्र का प्रारंभ के सम्बंध में डॉ. बालेइंदु शेखर तिवारी पूर्ण विश्वास के साथ इस बिंदु को रेखांकित करते हुए 'हिंदी जगत' पत्रिका लिखते हैं, "निश्चय ही हिंदी में सबसे पहले भारतेंदू ने ही लोक साहित्य का महत्व समझा था।"[5]

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति

लोक साहित्य के संदर्भ में 'लोक' शब्द का भाव विस्तृत अर्थ बोधक है। लोक साहित्य केवल आमजन का ही साहित्य नहीं है अर्थात् इसका विस्तार नगर जन तक भी है वास्तव में लोक साहित्य मौखिक ज्यादा और लिखित बहुत कम है। लोक साहित्य उस साहित्य को कहते हैं जिसकी रचना लोक द्वारा किया जाता है। लोक–साहित्य प्राचीन साहित्य है, उतना ही प्राचीन है जितना मानव इसलिए लोक साहित्य में जनजीवन की प्रत्येक वर्ग, समुदाय, प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक समय और उस समय की प्रकृति सभी कुछ लोक साहित्य में समाहित है। डॉ. अनुसुइया अग्रवाल द्वारा लिखी गई इस पुस्तक में 'छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति' लोक साहित्य की अवधारणा को और भी विस्तृत विवेचना के साथ छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य के बहाने इस समाज की लोक–परम्परा, लोक–संस्कृति, और लोक–सभ्यता का गहन अध्ययन करती है। छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य के अंतर्गत लोकगीत, लोकनाट्य, लोकगाथा और लोककथा आते हैं।

लोकगीत

लोकगीत एक व्यक्ति के द्वारा नहीं बल्कि पूरा लोक समाज द्वारा अपनाता है। लोकगीत मतलब लोक के गीत है। सामान्य शब्दों में लोक प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोगों द्वारा लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जाता है लोक गीतों का उदाहरण सुआ गीत, भोजली गीत, करमा गीत, बांस गीत आदि है।

परिभाषा

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में, "लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान संचित हैं। अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है।"6

भोजली गीत – *अहो देवी गंगा,*

देवी गंगा, देवी गंगा, लहर तुरंगा....
हमर भोजली दाई के भीजे आठो अंगा।
आई गई पूरा बोहाई गई कचरा
हमर भोजली दाई के सोन–सोन के अचरा।

लोकनाट्य

लोक में अपने–अपने मनोरंजन की मौलिक परंपराएं होती हैं। प्रत्येक अंचल में अपने ढंग की लोकरंग–शैलियों का पारम्परिक विकास होता रहा है, जिन्हें हम लोकनाट्य कहतें हैं। छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य प्रमुखतः ग्रामीण अंचलों में, मंच में प्रस्तुत किये जाने वाला नाट्य है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनाट्य रासलीला, नाचा, गम्मत, दहिकाँदो, भातरानाट आदि है।

नाचा– रहस की तरह नाचा भी छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय नाट्य है, जो सम्मोहन की आंतरिक शक्ति से परिपूर्ण होता है। नाचा अपने आरंभिक दिनों में छत्तीसगढ़ में निम्न स्तरीय मनोरंजन की विधा के रूप में प्रचलित रही। नाचा, हमारे छत्तीसगढ़ के ग्रामीण मंचों पर मशाल की रोशनी में 50 से 100 ग्रामीणों का मनोरंजन करने वाली एक मात्र लोक विधा है। बिजलियों की रोशनी में दर्शकों की संख्या 50 हजार से भी ज्यादा की कीर्तिमान बना रही है। डॉ. परदेशी राम वर्मा लिखते हैं "कल्पनाशीलता का लोक मंच में विस्तार है नाचा, जो कलाकार जिस सीमा पर जा सके उसे नाचा ने वहां तक पहुंचाने में पूरा साथ दिया है।"[7]

नाचा पार्टी के सभी कलाकार पुरुष पात्र होते हैं। नाचा का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन के साथ जनजीवन को सही दिशा दिखाना है। इन कलाकारों की एक मण्डली होती जिसमें अन्य पात्रों के साथ–साथ एक जोक्कड़ भी होता है जिसकी अहम भूमिका नाचा में रहती है। नाट्य के इस विधा में सभी प्रकार के वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है।

लोकगाथाः यह छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य द्वारा प्रदत्त वह सूत्र है, जो प्रतीत तत्वों से मिल जाए तो लोकगीत और कथा से जुड़ जाए तो लोकगाथा बन जाती है। संवादों से जुड़ जाता है, तब लोकनाट्य हो जाता है। छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य भी लोक कथाओं से समृद्ध है। यहां की लोक कथाएं हमारे छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक धरोहर है। इसका मूल स्वरूप प्रमाणिक रुप में कहीं पर भी उपलब्ध नहीं है, क्योंकि लोकगाथा वाचिक परंपरा के आधार पर चलती है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथा के उदाहरण– पंडवानी की गाथा, ढोलामारू की गाथा, लोरिक चंदा आदि है। हमारे छत्तीसगढ़ में यह लोकगाथा 'तम्बूरा' या 'चिकारा' के साथ गाया जाता है।

पंडवानी

पंडवानी महाभारत कथा का छत्तीसगढ़ी लोक गायन रूप है। महाभारत की कथाएं और सबल सिंह चौहान द्वारा लिखी दोहा–चौपाई की महाभारत है। पंडवानी लोकगाथा के प्रमुख कलाकारों में श्री झाडूराम देवांगन, पद्मश्री श्रीमती तीजनबाई, पुनाराम निषाद, रितु वर्मा आदि हैं। पंडवानी के पात्र महाभारत कालीन है वैसे पंडवानी की मुख्य नायक भीम हैं। पूरा कथाचक्र इसी पात्र के इर्द–गिर्द घूमता है। छत्तीसगढ़ में पंडवानी 'कापालिक' और 'वेदमती' गायन परम्परा के अनुसार गायी जाती है। छत्तीसगढ़ में पंडवानी की कथा 18 या 9 दिनों की होती है। महाभारत के 18 सर्गों को ग्रामीण परिवेश से जोड़कर पंडवानी गायन किया जाता है।

लोककथा

लोक साहित्य का अन्य महत्वपूर्ण अंग लोक कथाएं हैं। जिस प्रकार संसार के हर कोने–कोने में सूर्य की किरण व्याप्त है, ठीक उसी तरह से लोक के सभी भागों में लोक कथाएं विद्यमान हैं। लोक कथाओं का उद्‌भव संभवतः उतना ही प्राचीन है, जितना मनुष्य जन्म। लोक कथाएं लोक मानस, लोक संस्कृति, लोक रूचि में बिल्कुल साफ दिखाई देती है। लोक कथा का सर्वस्व लोक है। यह 'लोक' लोककथा में 'कथा' पद से भी अधिक महत्वपूर्ण है। इन लोक कथाओं का आदेश स्रोत लोकमानस है जो सनातन और फिर नवीन है। इन लोक कथाओं के पीछे सुनने–सुनाने की सहज प्रवृत्ति होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो– "वह कथा जिसे लोग कहते हैं, और सुनते हैं, लोककथा है।"[8]

लोककथा के उदाहरण सृष्टि कथा, देवताओं की कथा, व्रत कथा आदि है।

निष्कर्ष

'लोक', शास्त्र का वह प्रारंभिक अध्याय है जिसके बिना हम शास्त्र की कल्पना नहीं कर सकतें। वास्तव में साम्यवादी युग में लोक और शास्त्र अभिन्न थे। लोक और शास्त्र की दो अलग–अलग परम्पराएँ नहीं थी, एक ही वर्गहीन समाज था। इतिहास के शुरुआत में वह एक ही वर्ग था जो 'लोक' था किंतु इतिहास के दूसरे दौर में वर्गीकृत समाज का विकास हुआ और लोक तथा शास्त्र की दो परम्पराओं का आरंभ हुआ। लोक से ही विकसित हुई शास्त्र की परम्परा लोक की अपेक्षा अधिक नियमबद्ध, अनुशासित हुई और भाषा अधिक परिष्कृत, व्याकरण सम्मत और अलंकृत हो गई जबकि जिस लोक से प्रेरणा ले रही थी उस लोग की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक, निरलंकृत और मौखिक रही। लोग जितना सरल है उतना ही मनोरम भी ऐसे ही उसके विषय में, उसकी व्याख्याओं में, वैसे ही सादगी और खरापन होना जरूरी है। लेखिका सरल, सहज, मृदुल–स्वभाव, व्यक्तित्व के धनी हैं। डॉ. अनुसुईया अग्रवाल की रचनाओं में गहन चिन्तन किया गया है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, अनुसुइया. *हिंदी लोक साहित्य शास्त्र सिद्धांत और विकास.* दिल्ली नीरज बुक सेंटर, प्रथम संस्करण 2009 पृष्ठ क्रमांक 4.
2. अग्रवाल, अनुसुइया. *छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियां और जनजीवन.* दिल्ली भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2001 पृष्ठ क्रमांक 23.
3. अग्रवाल, अनुसुइया. *छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियां और जनजीवन.* दिल्ली भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2001 पृष्ठ क्रमांक 24.
4. अग्रवाल, अनुसुइया. *हिंदी लोक साहित्य शास्त्र सिद्धांत और विकास.* दिल्ली नीरज बुक सेंटर, प्रथम संस्करण 2009 पृष्ठ क्रमांक 275.
5. जैन, शान्ति. *लोकगीतों के संदर्भ और आयाम.* वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1999 पृष्ठ 1.
6. अग्रवाल, अनुसुइया. *छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति.* रायपुर शताक्षी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ क्र.51.
7. अग्रवाल, अनुसुइया. *छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति.* रायपुर शताक्षी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ क्र.65.
8. अग्रवाल, अनुसुइया. *छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति.* रायपुर शताक्षी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ क्र.73

****